IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

क्षमा शर्मा के बाल साहित्य में अन्तर्निहित कथावस्तु की स्वरूपात्मक विविधता

1. रेखा यादव, शोधार्थी (हिन्दी) किशोरी रमण (पी0जी0) कालेज, मथुरा (उ0प्र0)
2. डॉ0 कामना पण्ड्या(शोध निर्देशिका) प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, किशोरी रमण (पी0जी0) कालेज, मथुरा

शोध सारांश

क्षमा शर्मा एक सामाजिक चेतना सम्पन्न साहित्यकार हैं, जिनके बाल उपन्यास व बाल कहानियाँ जीवन के विभिन्न अनुभवों पर आधारित हैं। उनके बाल उपन्यासों व बाल कहानी संग्रहों में मध्यम वर्ग के जीवन की झाँकियों के साथ–साथ निम्न वर्ग के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व नैतिक समस्याओं से प्रभावित जीवन की स्थितियाँ तथा विभिन्न स्तरों पर उनकी परिणतियाँ आदि उजागर होती हैं। परिणामस्वरूप उनके समग्र बाल साहित्य में अन्तर्निहित कथावस्तु की स्वरूपात्मक विविधता दृष्टिगोचर होती है। कथा साहित्य के सैद्धातिक पटल पर कथावस्तु के विविध रूप उभर कर आते हैं, उन विशिष्ट रूपों में से कुछ प्रमुख इस प्रकार से हैं– सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक, तिलिस्मी व जासूसी आदि।

कथावस्तु के विविधतापूर्ण स्वरूपों में से सबसे पहला और अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रकार है– उसका सामाजिक होना। सामाजिक कथावस्तु युक्त साहित्यिक रचनाओं में सम सामयिक युग के विचार, आदर्श व समस्याओं का सामाजिक चित्रण किया जाता है, साथ ही उसमें सामाजिक धारणाओं व मतों का भी विशेष प्रभाव रहता है। कथावस्तु का दूसरा विशिष्ट रूप होता है उनमें धार्मिक पृष्टभूमि का निहित होना। विवेच्य कथावस्तु वाली साहित्यिक कृतियों में धार्मिक मतों व सांस्कृतिक मूल्यों का चित्रण किया जाता है। कथावस्तु का तीसरा महत्वपूर्ण रूप है– उसका ऐतिहासिक होना। ऐतिहासिक कथावस्तु वाली रचनाओं में इतिहास प्रधान घटनाओं तथा ऐतिहासिक तथ्यों को बड़ी प्रमुखता के साथ प्रस्तुत किया जाता है, साथ ही उक्त रचनाओं का नायक या नायिका कोई विख्यात ऐतिहासिक पात्र होता है। बाल कथा साहित्य के अन्तर्गत कथावस्तु अथवा विषयवस्तु का चौथा विशिष्ट स्वरूप है– उसका पौराणिक एवं मिथकीय होना। कथावस्तु के विवेच्य रूप के अन्तर्गत पुराणों व वेदों से सम्बन्धित विवरणों, घटनाओं व कहानियों का उल्लेख मिलता है। कथावस्तु अथवा विषयवस्तु के विविधता पूर्ण रूपों में उसका नैतिक या नैतिकता से लबरेज होना भी उसका पाचवाँ और अत्यन्त आवश्यक रूप माना जाता है। कथावस्तु का छठवाँ विशिष्ट रूप होता है– उसका मनोवैज्ञानिक होना। कथावस्तु का सातवाँ रूप होता है– उसका वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परिपूर्ण होना। बाल कथा साहित्य के अन्तर्गत कथावस्तु का नौवाँ व महत्वपूर्ण रूप उसका जासूसी युक्त होना माना जाता है।

मुख्य शब्द—इतिवृत्ति, पौराणिक, सामाजिकता, नैतिकता, तथ्यपरखता, तिलस्मी व जासूसी

शोध पत्र

क्षमा शर्मा एक सामाजिक चेतना सम्पन्न साहित्यकार हैं, जिनके बाल उपन्यास व बाल कहानियाँ जीवन के विभिन्न अनुभवों पर आधारित हैं। उनके बाल उपन्यासों व बाल कहानी संग्रहों में मध्यम वर्ग के जीवन की झाँकियों के साथ–साथ निम्न वर्ग के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व नैतिक समस्याओं से प्रभावित जीवन की स्थितियाँ तथा विभिन्न स्तरों पर उनकी परिणतियाँ आदि उजागर होती हैं। परिणामस्वरूप उनके समग्र बाल साहित्य में अन्तर्निहित कथावस्तु की स्वरूपात्मक विविधता दृष्टिगोचर होती है।

सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से कथावस्तु को कथा साहिय के वस्तुगत अध्ययन विधान का सबसे महत्वपूर्ण व प्रथम तत्व माना जाता है। सामान्यतः कहानी के ढ़ाँचे को कथावस्तु कहा जाता है। कथावस्तु को विषयवस्तु व इतिवृत्त आदि अन्य नामों से भी जाना जाता है। प्रत्येक कहानी के लिए कथावस्तु का होना अपरिहार्य माना जाता है क्योंकि इसके अभाव में कहानी सृजन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। डॉ0 परशुराम शुक्ल कहते हैं,**''कथावस्तु को एक ऐसे तत्व के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसमें बाल उपन्यासकार कथासूत्र और मुख्य कथानक तथा इसी प्रकार के कुछ अन्य उपकरणों के सहयोग से एक कथा की ऐसी रूपरेखा तैयार करता है, जिसमें एक कथा स्थिति क्रम से घटनाएँ घटित होती हैं।''**[1]

कथा साहित्य के सैद्धातिक पटल पर कथावस्तु के विविध स्वरूप उभर कर आते हैं, उन विशिष्ट रूपों में से कुछ प्रमुख इस प्रकार से हैं— सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक, तिलिस्मी व जासूसी आदि। कथावस्तु के इन विविध स्वरूपों के आधार पर क्षमा शर्मा के बाल उपन्यासों व बाल कहानियों का विवेचन प्रस्तुत है।

1. सामाजिक

कथावस्तु के विविधतापूर्ण रूपों में से सबसे पहला और अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रकार है— उसका सामाजिक होना। सामाजिक कथावस्तु युक्त साहित्यिक रचनाओं में सम सामयिक युग के विचार, आदर्श व समस्याओं का सामाजिक चित्रण किया जाता है, साथ ही उसमें सामाजिक धारणाओं व मतों का भी विशेष प्रभाव रहता है। विषयगत विस्तार की दृष्टि से सामाजिक पृष्टभूमि वाली कृतियों का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत एवं व्यापक रहता है। कथावस्तु के सामाजिक स्वरूप के अन्तर्गत क्षमा शर्मा कृत निम्नांकित बाल उपन्यास आते हैं— 'राजा बदल गया', 'होमवर्क' व 'भाई साहब' आदि। इसके अतिरिक्त उनकी बाल कहानियों 'क ख ग घ', 'पीलू', 'घर या चिड़ियाघर व 'माँ की साड़ी' आदि में भी सामाजिकता का पुट विद्यमान है। सामाजिकता की आदर्शवादी सीख देते हुये 'होमवर्क' नामक बाल उपन्यास में बादल की माँ उससे कहती हैं, **''सुनो बेटा, जब तुम दफ्तर फोन किया करो तो जो भी फोन उठाएँ उनसे पहले नमस्ते किया करो। फिर बहुत प्यार से कहा करो कि क्या आप मेरी मम्मी को बुला देंगे?''**[2]

2. धार्मिक

कथावस्तु का दूसरा विशिष्ट रूप होता है उनमें धार्मिक पृष्टभूमि का निहित होना। विवेच्य कथावस्तु वाली साहित्यिक कृतियों में धार्मिक मतों व सांस्कृतिक मूल्यों का चित्रण किया जाता है। क्षमा जी ने अपने कतिपय कथा साहित्य में अंधविश्वास को नकारते हुए परंपरागत धार्मिक मतों व मूल्यों में आस्था को स्वीकार किया है, साथ ही धार्मिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनूकूल जीवन की गरिमामयी व्यवहारिकता को भी महत्व दिया है। लेखिका की निम्न बाल कहानियों– ''मन्त्र का प्रभाव'', 'बताओ कितने वेद'' व ''दो–दो हाथ'' आदि में धार्मिक मूल्यों को उजागर किया गया है। ''मन्त्र का प्रभाव'' बाल कहानी में धार्मिक निष्टा व आस्था को बल प्रदान करते हुए एक ऋषि जीवन में हताश लकड़हारे के हाथ में एक ताबीज बाँधते हुए कहते हैं,**''इसके अन्दर एक मंत्र है जो तुम्हारी सहायता करेगा। लेकिन इसे कभी खोलना मत।''**[3]

3. ऐतिहासिक

कथावस्तु का तीसरा महत्वपूर्ण रूप है– उसका ऐतिहासिक होना। ऐतिहासिक कथावस्तु वाली रचनाओं में इतिहास प्रधान घटनाओं तथा ऐतिहासिक तथ्यों को बड़ी प्रमुखता के साथ प्रस्तुत किया जाता है, साथ ही उक्त रचनाओं का नायक या नायिका कोई विख्यात ऐतिहासिक पात्र होता है। डॉ0 परशुराम शुक्ल के शब्दों में, **''ऐतिहासिक (ग्रन्थ) जहाँ एक ओर बच्चों को इतिहास का परिचय देते हैं, ऐतिहासिक पात्रों से मिलवाते हैं तथा ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करते हैं, वही दूसरी ओर एक समाज के एक समय विशेष की संस्कृति और सभ्यता का भी बोध करते हैं।''**[4] क्षमा शर्मा के बाल साहित्य में भी कुछ कृतियाँ ऐतिहासिक तथ्यों का निरूपण करती हैं, उनमें से एक प्रमुख है– उनका सुप्रसिद्ध बाल उपन्यास 'पन्नाधाय'। इसके अतिरिक्त 'तलाश' नामक बाल कहानी में पुरंजन नामक राजा का ऐतिहासिक चरित्रांकन किया गया है।

4. पौराणिक

बाल कथा साहित्य के अन्तर्गत कथावस्तु अथवा विषयवस्तु का चौथा विशिष्ट स्वरूप है– उसका पौराणिक एवं मिथकीय होना। कथावस्तु के विवेच्य रूप के अन्तर्गत पुराणों व वेदों से सम्बन्धित विवरणों, घटनाओं व कहानियों का उल्लेख मिलता है। क्षमा जी कृत कतिपय बाल कहानियों में पौराणिक पात्रों, उनकी गतिविधियों व कार्यकलापों का विवरण मिलता है, उनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार से हैं– 'गुस्सैल परी', 'आएंगी परियाँ', 'बोली मछली', 'परियों के बच्चे' आदि। 'बोली मछली' बाल कहानी का शुभारम्भ लेखिका इस प्रकार से करती हैं, **''हरा–भरा था जंगल। एक ओर बहती कल–कल करती नदी। पास में ही पहाड़ियाँ थी। उन्हीं की एक गुफा में एक राक्षस रहता था।यों कहने को वह राक्षस था। उसके सिर पर सींग थे मगर था बेचारा बहुत भला। कभी न किसी को तंग करना, न किसी को सताना, बल्कि परेशानी में पड़े लोगों की मदद कर देता।''**[11]

5. नैतिक

कथावस्तु अथवा विषयवस्तु के विविधता पूर्ण रूपों में उसका नैतिक या नैतिकता से लबरेज होना भी उसका पाचवाँ और अत्यन्त आवश्यक रूप माना जाता है। नैतिकता नीति शास्त्र के नियमों व दिशा निर्देशों के आधार पर किसी उद्देश्य अथवा कार्य की बैधता के बारे में सही अथवा गलत का निर्धारण करती है। नैतिकता पूर्ण कथावस्तु वाले अनेकानेक बाल उपन्यास क्षमा शर्मा द्वारा लिखे गये हैं, उनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं,'शिब्बू पहलवान', 'होमवर्क', 'घर या चिड़ियाघर' व 'भाई साहब' आदि। लेखिका की निम्नांकित बाल कहानियाँ भी नैतिक शिक्षा, मानवीय संन्देश व नीतिगत विचारों से परिपूर्ण हैं– 'परी खरीदनी थी', 'फूलों का कालीन', 'खिल उठी चाँदनी', 'एक अकेली बेल', 'मोमबत्ती और दिया', 'दो गुलाब', 'तितली और हवा', 'मेरे दाँत लोगे' व 'गिलहरी और अंगूर' आदि। 'गिलहरी और अंगूर' नामक बाल कहानी में क्षमा शर्मा अमलताश के पेड़ के माध्यम से गिलहरी को नैतिकता का पाठ सिखाते हुई कहती हैं, **"क्यों? उस कमजोर बेल पर तो अपनी ताकत दिखा रही थी ? अब चींटियों से बचो। जो अपनी ताकत का घमंड दिखाता है, वह घमंड टूटकर ही रहता है।"**[6]

6. मनोवैज्ञानिक

कथावस्तु का छठवाँ विशिष्ट रूप होता है– उसका मनोवैज्ञानिक होना। विषयवस्तु के मनोवैज्ञानिक स्वरूप वाली साहित्यिक रचनाओं में कथानक के बाह्य रूप को अधिक महत्व न देकर उसके चरित्रों के आन्तरिक, मानसिक, भावनात्मक व मनोवैज्ञानिक पक्ष को प्रमुखता दी जाती है। इस तरह की कृतियों में मानव मन की अवचेतन अवस्था का मनोविश्लेषण किया जाता है, साथ ही यह सिद्ध करने का प्रयास किया जाता है कि कोई पात्र एक विशेष परिस्थिति में किस प्रकार से क्रिया और प्रतिक्रिया करता है और अपनी चेतन, अवचेतन व अर्द्धचेतन अवस्था में कैसे और किस प्रकार का सहसम्बन्ध स्थापित करता है। विवेच्य कथावस्तु की श्रेणी में क्षमा शर्मा के निम्नांकित बाल उपन्यास आते हैं– 'होमवर्क', 'मिट्ठू का घर' व 'इंजन चले साथ–साथ' आदि। लेखिका की मनोवैज्ञानिक बाल कहानियों में से कुछ प्रमुख हैं– 'गुड़िया का घोटा', 'बट्टा', 'चमेली', पैर में रस्सी', 'मीठे सपने', 'गुड़िया की तपस्या', 'चल बेटा', 'एक छोटा झूठ' व 'मुनमुन का पता' आदि। 'मीठे सपने' नामक बाल कहानी में भोलू रात में आने वाले डरावने सपनों से भयभीत होकर पिंकी को मीठे सपने देखने की मनोवैज्ञानिक तरकीब कुछ इस तरीके से सुझाता है, **"तू मीठे सपने देखना चाहती है? ठीक है, आज रात तुझे मीठे सपने दिखाई देंगे।...देख पिंकी, आज जब तू सोएगी तो इन टॉफियों के बारे में सोचना, ये किसी भी बुरे सपने को तेरे पास नहीं भटकने देगी।"**[7]

7. वैज्ञानिक

कथावस्तु का सातवाँ रूप होता है– उसका वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परिपूर्ण होना। वैज्ञानिक कथावस्तु से युक्त साहित्यिक रचनाओं में प्रायः वैज्ञानिकता, तथ्यपरखता, यथार्थ व तर्क–वितर्क को प्रमुखता दी जाती है, साथ ही उसमें वैज्ञानिक नियमों, कार्यकलापों एवं गतिविधियों के माध्यम से यथार्थ और कल्पना के मध्य तार्किक सामंजस्य स्थापित किया जाता है। डॉ0 परशुराम शुक्ल के शब्दों में,**"वैज्ञानिक बाल (रचनाओं) में भी कल्पना का महत्वपूर्ण स्थान होता है, किन्तु इस प्रकार की कल्पना को किसी न किसी वैज्ञानिक नियम के अनुसार तर्क देकर वास्तविक सिद्ध करने का प्रयास किया जाता है। यहाँ पर यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि सामान्यतः कल्पना किसी न किसी रूप में यथार्थ से सम्बन्धित होती है। कुछ वैज्ञानिक**

कल्पनाएँ तो इतनी तथ्यपरक होती हैं कि इन्हें यथार्थ में बदला जा सकता है।”[8] क्षमा शर्मा के बाल कथा साहित्य के अन्तर्गत ‘बोलने वाली घड़ी’ नामक बाल उपन्यास तथा ‘भानू चाचा’ व ‘लालू का मोबाइल’ नामक बाल कहानियों में वैज्ञानिक, तथ्य परख व तार्किक कथावस्तु का निरूपण किया गया है।

8. तिलस्मी

कथावस्तु के विविध स्वरूपों में उसका तिलस्मी होना भी विषय वस्तु का आठवाँ और महत्वपूर्ण रूप माना जाता है, जिसमें जादू–टोना, तिलस्मी माया जाल, मन्त्रों व चमत्कारों आदि से सम्बन्धित घटनाओं एवं गतिविधियों को प्रमुखता दी जाती है, साथ ही उसमें अलौकिक दुनिया के सुलझे अथवा अनसुलझे रहस्यों पर भी प्रकाश डाला जाता है। तिलस्मी कथावस्तु की श्रेणी में क्षमा जी की निम्नांकित बाल कहानियाँ आती हैं– ‘उस पुरानी हवेली में’, ‘भीतर हाथी’, ‘गुस्सैल परी’ व ‘तलाश’ आदि।

9. जासूसी

बाल कथा साहित्य के अन्तर्गत कथावस्तु का नौवाँ व महत्वपूर्ण स्वरूप उसका जासूसी युक्त होना माना जाता है, जिसमें किसी अपराध और आपराधिक घटनाओं के घटित होने के बाद किसी व्यक्ति विशेष द्वारा अपनी बुद्धि, तर्क, चातुर्य व कार्य कुशलता से अपराधी का अन्ततः पता लगाकर समस्या समाधान किया जाता है। डॉ0 परशुराम शुक्ल कहते हैं, **“जासूसी बाल (रचनाओं) में एक अपराधी प्रवृति का व्यक्ति किसी एक प्रकार का अथवा अनेक प्रकार के अपराध करता है। वह अपराधी कार्य केवल एक बार कर सकता है। उसके अपराधी कार्यो से जन सामान्य को परेशानी होती है अथवा मानवता खतरे में पड़ती हुई दिखाई देती है। इससे शासन तन्त्र परेशान हो उठता है। किसी सरकारी अथवा प्राइवेट जासूस को इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए नियुक्त किया जाता है। जासूस सफलता प्राप्त करता है।”**[9] साहित्यिक पटल पर जासूसी रचनाओं को पर्याप्त महत्व दिया गया है, किन्तु क्षमा शर्मा के बाल कथा साहित्य में इस प्रकार की कृतियों की संख्या बहुत कम है। लेखिका की निम्नांकित बाल कहानियों में विवेच्य कथावस्तु के जासूसी तत्व पाये जाते हैं– ‘पाइप में कौन’ ‘बाँसुरी बजाने बाला खरगोश’ व ‘खोखल में पोटली’ आदि।

समीक्षात्मक निष्कर्ष

क्षमा शर्मा हिन्दी बाल साहित्य की एक सजग, संवेदनशील और सामाजिक चेतना सम्पन्न रचनाकार हैं, जिनके बाल उपन्यासों तथा बाल कहानी संग्रहो में मध्यवर्गीय बाल जीवन की अनुभवजन्य झाँकियों के साथ–साथ निम्न वर्गीय बालकों की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व नैतिक समस्याओं से प्रभावित जीवन की विभिन्न स्थितियों को उजागर किया गया है। उनके बाल कथा साहित्य में बाल मन की मानसिक प्रवृत्तियों, क्रियाओं एवं प्रतिक्रियाओं आदि का बखूबी चित्रण किया गया है। संक्षेप में, हिन्दी बाल साहित्य के परिदृश्य पर वह बाल मन की एक गहरी चितेरी एवं सशक्त बाल साहित्यकार के रूप में उभर कर आती हैं।कथा साहित्य के सैद्धान्तिक पटल पर कथा वस्तु के विविध रूप उभर कर आते हैं, उनमें से कुछ प्रमुख इस

प्रकार से हैं– सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक, तिलिस्मी व जासूसी आदि। कथावस्तु के उक्त समस्त रूप क्षमा शर्मा के विभिन्न बाल उपन्यासों तथा बाल कहानियों में दृष्टव्य हैं।

सन्दर्भ सूची

1. शुक्ल डॉ0 परशुराम, ''हिन्दी बाल साहित्य का सैद्धांतिक विवेचन'', कानपुर, आराधना ब्रदर्स, 2018, पृ0 26
2. शर्मा क्षमा, ''होमवर्क'', नई दिल्ली, जगतराम एण्ड संस, 2008, पृ0 33–34
3. शर्मा क्षमा, ''परी खरीदनी थी''(मन्त्र का प्रभाव), नई दिल्ली, नवनीत प्रकाशन, 1983, पृ0 14
4. शुक्ल डॉ0 परशुराम, ''हिन्दी बाल साहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन'', पूर्व उद्धत, पृ0 37
5. शर्मा क्षमा, ''पानी–पानी'' (बोली मछली), नई दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन, 2019, पृ0 37
6. शर्मा क्षमा, ''फिर से गाया बुलबुल ने'' (गिलहरी और अंगूर), नई दिल्ली, क्षितिज प्रकाशन, 2005, पृ0 32
7. वही, पृ0 23–24
8. शुक्ल डॉ0 परशुराम, ''हिन्दी बाल साहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन'', पूर्व उद्धत, पृ0 39–40
9. वही, पृ0 40

IJCRT